

चित्रा नक्षत्र में जन्मे जातक का स्वभाव, कैरियर, रोग और उपाय:



ज्योतिषाचार्य पं योगेश पौराणिक

चित्रा नक्षत्र हमारे नक्षत्र मंडल का मध्य भाग माना जाता है। यह बहुत ही चमकदार तारे के रूप में दिखाई पड़ता है। इसे विश्वकर्मा या ब्रम्हा जी का निवास स्थान भी माना जाता है। चित्रा शब्द का अर्थ अदभुत या उज्ज्वल चित्र होता है। चित्रा नक्षत्र का

प्रभाव कन्या और तुला राशि के जन्मे लोगों पर पूर्ण रूप से दिखाई देता है। इस नक्षत्र के नक्षत्रपति मंगल तथा अधिपति देवता विश्वकर्मा जी को माना गया है। इस नक्षत्र का प्रतीक चिन्ह मोती या चमकदार हीरे को माना जाता है।

स्वभाव: चित्रा नक्षत्र में जन्मे जातक उत्साही, गतिशील, ऊर्जावान, सक्षम तथा प्रेम प्रिय होता है। इस नक्षत्र में जन्मे जातक खाली बैठना पसंद नहीं करते तथा हर काम को रचनात्मक तरीके से पूर्ण करते हैं। विद्वानों के अनुसार इस नक्षत्र के जन्मे जातक सुंदर नेत्र वाला तथा आकर्षक देह का, शिष्ट, मुदुभाषी, करुणाशील तथा नीति नियम को मानने वाला होता है।

कैरियर: इस नक्षत्र के जन्मे लोग सौंदर्य प्रसाधन, मंच संचालक, व्यापारी, इंटीरियर डिजाइनर, वास्तुशास्त्री, शिल्पी, मैनेजर,



उपन्यासकार, पेंटर, चित्रकार, विज्ञापन, लेखक, शल्य चिकित्सक, वास्तु विशेषज्ञ आदि के क्षेत्र में कैरियर बनाकर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

रोग: इस नक्षत्र में जन्मे जातकों को फोड़ फुंसी, पेट में गैस, गठिया, मधुमेह आदि प्रकार के रोगों से जूझना पड़ सकता है।

उपाय: चित्रा नक्षत्र में जन्मे जातक को देवी दुर्गा की उपासना अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती है। जीवन में यश, मान सम्मान, धन और पुत्र प्राप्ति हेतु मां दुर्गा के सहस्रनामों का पाठ करना चाहिए। जीवन में कष्टों से मुक्ति हेतु नवग्रां मंत्र का जाप करना चाहिए। सफेद, हल्का हरा रंग का प्रयोग इनके लिए भाग्यशाली होता है।

लहसुन-प्याज का पानी पीने से स्वास्थ्य को मिलते हैं जबरदस्त फायदे

अच्छी सेहत के लिए हम सभी क्या-क्या नहीं करते हैं। लहसुन और प्याज का पानी पीने से इम्युनिटी बूस्ट होती है। इसके साथ ही ब्लड शुगर को नियंत्रित करता है, पाचन में सहायता मिलती है।

खराब लाइफस्टाइल और गलत खानपान के कारण हेल्थ पर काफी असर पड़ता है। हेल्थ को बेहतर बनाने के लिए अपने आहार में लहसुन-प्याज का पानी पीने से कई फायदे मिलते हैं। किचन में मौजूद लहसुन और प्याज किसी रामबाण से कम नहीं है। इसमें औषधीय गुणों मौजूद होते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए सबसे बढ़िया माना जाता है।

लहसुन-प्याज के पानी का सेवन करने से क्या होता है

इम्युनिटी बूस्ट होती है

एक्सपर्ट के अनुसार, कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने के लिए लहसुन और प्याज के पानी का सेवन किया जा

सकता है। दोनों सामग्रियों में रोगानुरोधी गुण होते हैं जो संक्रमण से लड़ने में मदद कर सकते हैं और शरीर की प्राकृतिक रक्षा तंत्र को मजबूत कर सकते हैं।

ब्लड शुगर कंट्रोल होता है

लहसुन-प्याज के पानी का सेवन करने से हाई ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में भूमिका निभा सकता है। लहसुन और प्याज दोनों के अर्क में डायबिटीज को कंट्रोल करता है।

दिल को स्वस्थ बनाए रखें

लहसुन और प्याज का पानी दिल को स्वस्थ बनाए रखने के लिए भी फायदेमंद माना जाता है। विशेष रूप से, दोनों सामग्रियों में ऑर्गेनोसल्फर यौगिक होते हैं, जो हाई ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करने में भूमिका निभाता है।

स्वस्थ पाचन को बढ़ावा दें

लहसुन और प्याज का पानी पाचन संबंधी समस्याओं को दूर करता है। एक्सपर्ट के मुताबिक लहसुन और प्याज का पानी पीने से पाचन एंजाइमों के उत्पादन



को उत्तेजित करने में सहायता करता है, जो एक स्वस्थ पाचन तंत्र में योगदान देता है।

त्वचा की चमक बढ़ाता है

प्याज और लहसुन विशेष रूप से क्वेरसेटिन से पाया जाता है, यह एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट जो

कोशिकाओं को क्षति से बचाता है। यह त्वचा के स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है और इसे सूरज की क्षति से बचाता है।

लहसुन और प्याज का पानी कैसे बनाएं

इसके लिए सबसे पहले आप एक पैन लें और उसमें लहसुन को दो कलियां और आधा प्याज डालें और पानी को अच्छी तरह से उबाल लें। जब पानी उबल जाए और पानी को छान लें। इसके बाद इसका आप सेवन कर सकते हैं।

मलाई से नहीं इस चीज से भी बना सकते हैं देसी घी, बाजार से नहीं पड़ेगा खरीदना



कई बार ज्यादा पैसे देने पर भी शुद्ध घी नहीं मिलता है। इसलिए अक्सर हम घर पर ही दूध की मलाई से घी बना लेते हैं। लेकिन क्या आपने सोचा है कि मलाई इकट्ठा न हो पाने पर घी कैसे बनाएं।

घी हमारी सेहत के लिए काफी फायदेमंद होता है। बड़े होते बच्चे के शरीर और दिमाग को सही पोषण देता है और बड़ों को घी तंदुरुस्त रखने में सहायता करता है। वहीं घी खाने के स्वाद को भी बढ़ाने का काम करता है। वहीं गरमा-गरम रोटी पर भी घी लग जाए तो रोटी का भी स्वाद बढ़ जाता है। वहीं किसी भी चीज का हलवा घी के बिना अधूरा होता है। चाहे बात स्वाद की हो या सेहत की दोनों ही कड़ीशन में घी जरूरी होता है। इसलिए लोग बाजार से महंगा घी खरीद लेते हैं।

लेकिन कई बार ज्यादा पैसे देने पर भी शुद्ध घी नहीं मिलता है। इसलिए अक्सर हम घर पर ही दूध की मलाई से घी बना लेते हैं। लेकिन क्या आपने सोचा है कि मलाई इकट्ठा न हो पाने पर घी कैसे बनाएं। ऐसे में

आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको दूध जैसी सफेद चीज से बनाने की ट्रिक बताने जा रहे हैं।

इस चीज से बनाएं घी

बता दें कि घी बनाने के लिए अगर आप मलाई न जमा पा रहे हों, तो आप पर्याप्त मात्रा में मलाई खरीद कर ला सकते हैं। दूध जैसी सफेद चीज यानी की दही भी है। जो घी बनाने के काम आ सकता है। वहीं अच्छी बात यह है कि बाजार में दही सस्ते दाम पर मिल जाएगी और आप इससे भी मलाई जैसा काम करता है।

गाढ़ा दही जमाना है बेहद आसान घी बनाने के लिए आपको गाढ़े दही की आवश्यकता होगी। अगर आप गाढ़ा दही नहीं खरीद रहे हैं, तो इसको आसानी से घर पर भी जमा सकते हैं। अब गाढ़ा दही जमाने के लिए फुल क्रीम दूध को अच्छे से उबाल लें। उबलने के बाद इसको ठंडा होने के लिए रख दें। जब दूध ठंडा हो जाए तो इसमें एक दो चम्मच दही डाल दें और दूध में दही को अच्छे से मिलाएं कर लें। गर्मी के मौसम में दही जमाने में 3-4 घंटे का समय और

सर्दियों में करीब 8 घंटे लग सकते हैं। वहीं अगर समय कम है, तो आप दही खरीद सकते हैं।

दही से बनाएं मक्खन

घी बनाने से पहले आपको दही से मक्खन तैयार करना होगा। फिर जब दही गाढ़ा हो जाए तो इसमें मौजूद एक्स्ट्रा पानी को सूती कपड़े की सहायता से निकाल दें। अब गाढ़े दही को अच्छे से मथ लें। अब दही को धीरे-धीरे गर्म करते जाएं, फिर कम आंच पर दही के ऊपर थोड़ी देर में मक्खन तैरने लगेगा। अब इसको निकालकर अलग रखते जाएं।

मिनटों में बन जाएगी घी

बता दें कि आप जब दही से मक्खन निकालते हैं, तब फिर घी बनाने की बारी आती है। घी निकालने के लिए मक्खन को धीमी आंच में गर्म करते रहें और आप देखेंगे कि घी बनने लग जाएगा। घी निकालने के बाद आप इसको एक बर्तन में छानकर स्टोर कर सकते हैं। वहीं नारियल के तेल से घी बनाना बहुत आसान है और आपको इससे कम पैसे में शुद्ध दानेदार घी मिल जाएगा।

हर सोमवार को करें भगवान शिव के इन मंत्रों का जाप, जीवन के कष्टों से मिलेगी निजात

सोमवार के दिन भगवान शिव की विशेष पूजा-अर्चना करने से जातक को भोलेनाथ की कृपा और आशीर्वाद प्राप्त होता है। वहीं इस दिन भगवान शिव के मंत्रों का जाप करने से व्यक्ति को कई तरह से लाभ हो सकता है।

भगवान शिव को देवों के देव महादेव कहा जाता है। धार्मिक मान्यता है कि भगवान भोलेनाथ की पूजा-अर्चना करने से जातक के जीवन के सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। सोमवार का दिन भगवान शिव को समर्पित होता है। सोमवार के दिन भगवान शिव की विशेष पूजा-अर्चना करने से जातक को भोलेनाथ की कृपा और आशीर्वाद प्राप्त होता है। वहीं इस दिन भगवान शिव के मंत्रों का जाप करने से व्यक्ति को कई तरह से लाभ हो सकता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि भगवान शिव के



मंत्रों का जाप करने से क्या लाभ होता है।

ॐ नमः शिवाय

भगवान शिव का यह मंत्र जितना अधिक सरल है उतना ही प्रभावशाली भी है। इस मंत्र का रोजाना जाप करने से जातक को आरोग्य की प्राप्ति हो सकती है।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीमव ममृताम् ।

यह भगवान शिव का महामृत्युंजय मंत्र है। इस मंत्र का रोजाना जाप करने से जातक की अकाल मृत्यु के भय को टाला जा सकता है। इस मंत्र का जाप करने से

जातक की आयु भी लंबी होती है और उसको हर प्रकार के भय से मुक्ति मिलती है।

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः

बता दें कि यह भगवान शिव का रूद्र मंत्र है। मान्यता है कि इस मंत्र का प्रतिदिन जाप करने से जातक की हर इच्छा पूरी हो सकती है।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

यह मंत्र भगवान शिव का प्रभावशाली मंत्र है। अगर कोई जातक रोजाना भगवान शिव के इस मंत्र का जाप करता है, तो उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकती है।

ऊं पशुपतय नमः

भगवान भोलेनाथ के इस मंत्र का जाप करने से भय दूर होता है और व्यक्ति को महादेव की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

कढ़ी-पकौड़ी की रस्म के बाद महाकुंभ से अखाड़े विदा, संतों की भर आई आंखें



महाकुम्भ 2025 की आभा रहे नागा संन्यासी और अखाड़े के साधु-संत मेले से खाना हो गए। परंपरागत रूप से तीन अमृत (शाही) स्नान के बाद अखाड़े यहां नहीं रहते हैं। माघ शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को रवानगी से पहले साधु-संतों ने सभी विधानों को पूरा किया। सबसे पहले धर्म ध्वजा के नीचे स्थापित इष्ट देव को अंदर कक्ष में ले गए। जहां पर उनके सामने पूर्णाहुति हवन किया।

पूर्णाहुति हवन के दौरान अष्ट कौशल के संत अपने दिगंबर वेश में आए और फिर अंदर सुरक्षित रखे गए सूर्य प्रकाश (भाले) को लिया और धर्म ध्वजा के नीचे आकर रस्सी ढीली कर दी गई। फिर पैदल ही सूर्य प्रकाश को अपने अखाड़ों के स्थायी कार्यालय लेकर गए। जिसके बाद छावनी में आकर स्नान किया, वस्त्र धारण कर कढ़ी-पकौड़ी की रस्म को पूरा कर संत प्रयागराज से खाना हो गए। निरंजनी, आनंद, जूना, आवाहन, महानिर्वाणी और अटल अखाड़ों में एक सा ही दृश्य दिखाई दिया। उधर उदासीन और निर्मल अखाड़ों में भी परंपरागत रूप से इष्ट देव का पूजन कर संतों ने धर्म ध्वजा उतारी और सामान अपने शहर स्थित कार्यालय भेज दिया। वहीं अगिन अखाड़ा माघी पूर्णिमा के स्नान के बाद 13-14 फरवरी को मेले से प्रस्थान करेगा। जिस छावनी को संतों ने तिल-तिल कर बनाया। जिसके शिविर को इंच-इंच जमीन नपवाकर लगाया, उसे आज छोड़कर जाते वक्त संतों की आंखों में आंसू आंसू थे। हालांकि इस बात की खुशी थी थी कि महाकुम्भ 2025 उनके सानिध्य में सकुशल पूरा हुआ। करोड़ों श्रद्धालु यहां आए और अमृत स्नान के भागीदार बनें। निरंजनी अखाड़े में श्रीमहंत रवींद्र पुरी, सचिव महंत रामरतन गिरि, सचिव महंत ओंकार गिरि हो या फिर जूना अखाड़े में

संरक्षक महंत हरि गिरि, अध्यक्ष महंत प्रेम गिरि, अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष महंत नारायण गिरि और महानिर्वाणी अखाड़े के महासचिव महंत रवींद्र पुरी, सचिव महंत यमुना पुरी सभी इस वक्त भावुक हो उठे। अपने अखाड़ों में संत एक दूसरे के गले मिले और फिर आगे बढ़े।

संतों ने भस्मी स्नान कर दिगंबर वेश किया धारण

सनातन धर्म की ध्वजा उठाने वाले अखाड़े प्रयागराज से खाना हुए। इसके पहले सभी अखाड़ों में संत दिगंबर रूप में दिखे। यह दृश्य ठीक वैसा था, जैसा छावनी प्रवेश के दिन था। फर्क था तो बस इतना कि उस दिन हजारों संत ऐसे दिखे और शुक्रवार को पंच परमेश्वर ही ऐसे थे। धर्म ध्वजा की रस्सी ढीली करने से पहले सभी ने स्नान कर शरीर में भस्मी लपेटी। इसके बाद लंगोट धारण किया। लंगोटी इसलिए कि अब नागा साधु संत महाकुम्भ के बाद एक बार फिर संसार में शामिल होंगे।

लोकाचार के कारण वो हमेशा नागा वेश में नहीं रह सकते, यह स्वरूप तो केवल कुम्भ और महाकुम्भ के दौरान ही दिखाई देता है। संत भगवान की पूजा के बाद अखाड़े की धर्म ध्वजा के पास आए माघी पूर्णिमा के स्नान के बाद 13-14 फरवरी को मेले से प्रस्थान करेगा। जिस छावनी को संतों ने तिल-तिल कर बनाया। जिसके शिविर को इंच-इंच जमीन नपवाकर लगाया, उसे आज छोड़कर जाते वक्त संतों की आंखों में आंसू आंसू थे। हालांकि इस बात की खुशी थी थी कि महाकुम्भ 2025 उनके सानिध्य में सकुशल पूरा हुआ। करोड़ों श्रद्धालु यहां आए और अमृत स्नान के भागीदार बनें। निरंजनी अखाड़े में श्रीमहंत रवींद्र पुरी, सचिव महंत रामरतन गिरि, सचिव महंत ओंकार गिरि हो या फिर जूना अखाड़े में

र अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद व मनसा देवी मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्रीमहंत रवींद्र पुरी ने बताया कि यहां से भगवान को अपने-अपने शहर के मंदिरों के विग्रह में रखा गया। जैसे निरंजनी अखाड़े का दारागंज में रखा गया। इसके बाद संत वाराणसी के लिए निकले और वहां होली तक रहेंगे।

दालचीनी का जादुई ड्रिंक.



हाई बीपी, शुगर, PCOD, PCOS, गैस, एसिडिटी, शरीर की सूजन, मोटापा और ऐसी ही हजारों बीमारियां हैं जिनसे आज कल सभी पीड़ित हैं।

● इन बीमारियों से लड़ने के लिये एक ऐसी प्राकृतिक उपचार, जिसे नियमित रूप से पालन करें तो 100% ठीक हो सकते हैं।

● जी हां, हल्दी, अदरक और दालचीनी को ऐसी ड्रिंक, जिसे पीने से शरीर की हर बीमारी ठीक हो जाएगी।

जानिये फायदे और साथ में बनाने की बिधि.

इस ड्रिंक को बनाने के लिये 1/2 चम्मच ताजा घिसी अदरक का जूस,

1/2 चम्मच हल्दी,

1 इंच दालचीनी का टुकड़ा और 400ml पानी।

● गैस पर पानी उबलने के लिये रखें,

● फिर उसमें दालचीनी डालें और आंच को एक दम धीमा कर दें।

● फिर इसमें हल्दी और अदरक का जूस मिलाएं।

● 40 सेकेंड तक पकाएं और गैस बंद कर दें।

● अब इसे छान कर ठंडा या गरम पियें।

● अच्छा होगा कि कच्ची हल्दी का प्रयोग करें पर न होने पर शुद्ध हल्दी पाउडर भी ले सकते हैं।

● इस ड्रिंक को सुबह खाली पेट नाश्ते के पहले और फिर रात को सोने से पहले पीना होगा।

इसके क्या फायदे

● शरीर को डिटॉक्स करे।

● यह प्राकृतिक चाय आपके खून से सारी गंदगी को बाहर निकालेगी और शरीर को हेल्दी और साफ बनाएगी।

माइग्रेन से छुटकारा दिलाए

● इस हर्बल ड्रिंक में सूजन को कम करने की शक्ति होती है और यह माइग्रेन से राहत दिलाता है।

● मतली से आराम दिलाए,

● पेट में एसिड लेवल को कम करता है जिससे मतली नहीं आती।

● यह प्रेगनेंट महिलाओं में मॉर्निंग सिकनेस को भी दूर करता है।

मधुमेह के लिये रामबाण

● यह प्राकृतिक ड्रिंक शरीर में ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल कर के रखता है और मधुमेह के लक्षणों को ठीक करता है।

अपच दूर करे

● अगर पेट हमेशा भरा भरा रहता है और उसमें गैस बनी रहती है तो यह ड्रिंक जरूर पीना चाहिये।

● यह पेट के एसिड को बैलेंस करता है और अपच को दूर करता है।

पीरियड्स के दर्द को दूर करे

● इसमें सूजन को कम करने की क्षमता होती है इसलिए इसको पीने से क्रेम्प्स दूर होते हैं।

मोटापा कम करे

● अगर मोटापा है तो इस चाय को रोज सुबह खाली पेट और रात में डिनर के बाद पियें।

● इससे आपकी केलोरी बर्न होगी तथा शरीर का मेटाबोलिज्म इतना अच्छा हो जाएगा कि बिना मेहनत और डाइटिंग किये ही वजन कम होने लगेगा।

21 से 23 फरवरी के बीच होगी विंटेज कार रैली, 11वें संस्करण में शामिल होंगी 125 विंटेज कार और बाइक्स

परिवहन विशेष न्यूज
दिल्ली में विंटेज कार रैली दुनियाभर के कई देशों में लोग Vintage Cars को काफी पसंद करते हैं। 21 gun salute concours de elegance के 11वें संस्करण का आयोजन 21 से 23 फरवरी 2025 के बीच आयोजन केंद्र सरकार के पर्यटन मंत्रालय के साथ मिल कर किया जाएगा। इसमें कितनी विंटेज कार और विंटेज बाइक्स इसमें शामिल होंगी। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। दुनिया के कई देशों के साथ ही भारत में भी विंटेज और क्लासिक कारों का काफी पसंद किया जाता है। इनको पसंद करने वालों के लिए दिल्ली एनसीआर में फरवरी 2025 के दौरान बड़े स्तर पर Vintage Cars की रैली का आयोजन किया जाएगा। कितनी कारें इसमें शामिल होंगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

दिल्ली में होगा विंटेज कार रैली का आयोजन
दुनिया की कुछ सबसे पुरानी कारों का मेला दिल्ली में होने जा रहा है। फरवरी 2025 में होने वाले इस विंटेज कारों के मेले में कई बेहतरीन कारों को शोकेस किया जाएगा। 21 gun salute concours de elegance के 11वें संस्करण का आयोजन 21 से 23 फरवरी 2025 के बीच किया जाएगा। इस रैली को पर्यटन मंत्रालय के सहयोग से किया जा रहा है।

कितनी कारें होंगी शामिल
विंटेज रैली में 125 के करीब विंटेज और क्लासिक कारों को शोकेस किया जाएगा। इसके अलावा रैली में 50 हेरिटेज मोटरसाइकिल को भी



शोकेस किया जाएगा। जिनमें कई ऐसी कारें और बाइक्स शामिल होंगी जो भारत में ही नहीं बल्कि दुनियाभर में काफी दुर्लभ होंगी।

आयोजन करने वाले ट्रस्ट के संस्थापक ने कही यह बात

21 गन सेल्यूट हेरिटेज एंड कल्चरल ट्रस्ट के संस्थापक और मैनेजिंग ट्रस्टी मदन मोहन ने कहा

कि हम भारत को वैश्विक विरासत मोटरिंग पर्यटन के मानचित्र पर स्थापित करने के लिए हर साल नए मानक तय कर रहे हैं। इस साल जो आयोजन किया जाएगा उसमें भारत ही नहीं बल्कि दुनिया की कई दुर्लभ कारों को शोकेस किया जाएगा।

शोकेस की दो दुर्लभ कारें

प्रेस कॉन्फ्रेंस के की घोषणा के दौरान दो बेहद दुर्लभ विंटेज कारों को शोकेस किया गया। इन कारों में 1932 में बनी लॉसिन ऑस्टुरा पिनिनफेरिना के साथ ही 1948 में बनाई गई बेंटले मार्क 6 ड्रॉपहेड कूपे को शोकेस भी किया गया। खास बात यह है कि यह दोनों ही कारें देश में इकलौती कारें हैं, जो इतनी बेहतर स्थिति में हैं।

मारुति सेलेरियो अब हुई ज्यादा सुरक्षित, सभी वेरिएंट्स में मिलेंगे 6 एयरबैग, कीमत 5.64 लाख रुपये से शुरू



परिवहन विशेष न्यूज
6 एयरबैग के साथ मारुति सेलेरियो भारत की प्रमुख वाहन निर्माता Maruti की ओर से हैचबैक सेगमेंट से लेकर एसयूवी तक कई कारों को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से बजट कार के तौर पर ऑफर की जाने वाली Maruti Celerio को और ज्यादा सुरक्षित बना दिया गया है। इस गाड़ी को किस तरह से ज्यादा सुरक्षित बनाया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में एसयूवी के साथ ही हैचबैक कारों को भी पसंद किया जाता है। Maruti की ओर से कम बजट वाली हैचबैक कार के तौर पर Celerio को ऑफर किया जाता है। अब इस गाड़ी में सफर करना और ज्यादा सुरक्षित हो गया है। कंपनी की ओर से इसमें किस तरह की सुरक्षा को दिया है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

ज्यादा सुरक्षित हुई Maruti Celerio
मारुति की ओर से हैचबैक सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली कार Maruti Celerio अब पहले से

ज्यादा सुरक्षित हो गई है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी में स्टैंडर्ड तौर पर 6 Airbag दे दिए हैं। ऐसे में अब इस गाड़ी के बेस से लेकर टॉप वेरिएंट तक इस सेफ्टी फीचर को दिया जाएगा।

कार के Brochure में हुआ अपडेट
नए साल में कंपनी की ओर से गाड़ी के ब्रोशर को भी अपडेट किया गया है। जिसमें छह एयरबैग की जानकारी दी गई है। ब्रोशर के मुताबिक सेलेरियो में अब साइड और कर्टेन एयरबैग के साथ ही ड्यूल फ्रंट एयरबैग (6 airbags Maruti Celerio) भी दिए जा रहे हैं। इसी के साथ अब इस कार में थ्री पाइंट सीट बेल्ट को सभी सीटों के लिए दिया गया है।

कैसे हैं फीचर्स
कंपनी की ओर से इसमें कई बेहतरीन फीचर्स और Celerio safety features को ऑफर किया जाता है। इसके बेस वेरिएंट में भी बांडी कलर्ड बंपर, क्रोम एसेंट के साथ फ्रंट ग्रिल, फ्रंट केबिन लैंप, छह बोतल होल्डर, मैनुअल एसी, पावर स्टेयरिंग, इंजन आइडल स्टार्ट/स्टॉप, डिस्टेंस टू एंटी, गियर शिफ्ट इंजीकेटर, रिवर्स पार्किंग सेंसर, एबीएस, ईबीडी, ईएसपी, हेडलाइट लेवलिंग, फ्रंट डिस्क

ब्रेक, इमोबिलाइजर, स्पीड अलर्ट सिस्टम, चाइल्ड लॉक रियर डोर लॉक जैसे फीचर्स इसमें मिलते हैं।

कितना दमदार इंजन
मारुति की ओर से सेलेरियो में 998 सीसी की क्षमता का K10C इंजन दिया जाता है। जिससे इसे 50.4 किलोवाट की पावर और 91.1 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसमें पेट्रोल के साथ ही सीएनजी का विकल्प भी दिया जाता है।

कितनी है कीमत
Maruti Celerio को साल 2025 में खरीदने पर आपको 5.64 लाख रुपये देने होंगे। यह एकशोरूम कीमत इसके बेस वेरिएंट LXI MT के (Celerio starting price) लिए है। इसके अलावा इसके टॉप वेरिएंट की एकशोरूम कीमत 7.37 लाख रुपये है।

लाइव मुकाबला
भारतीय बाजार में सेलेरियो को हैचबैक सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला मारुति की ही Wagon R, S Presso के अलावा Renault Kwid, Hyundai Grand Nios i10 जैसी कारों के साथ होता है।

परिवहन विशेष न्यूज

महिंद्रा की ओर से कुछ समय पहले ही नई Electric SUV के तौर पर BE6 को लाया गया है। जल्द ही एसयूवी के लिए बुकिंग को शुरू किया जाएगा। Mahindra BE6 के बेस वेरिएंट Pack One में कितनी दमदार बैटरी और मोटर मिलती है। किस तरह के फीचर्स मिलते हैं। कितनी रेंज के साथ इसे लाया जाएगा। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में एसयूवी को ऑफर करने वाली निर्माता Mahindra की ओर से नई Electric SUV के तौर पर Mahindra BE6 को लाया गया है। कंपनी की ओर से इस एसयूवी के बेस वेरिएंट के तौर पर ऑफर किए जाने वाले Pack One में किस तरह की खासियत को दिया जाता है। क्या इसे खरीदना आपके लिए बेहतर विकल्प साबित हो सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Mahindra कर रही है BE6 को

इलेक्ट्रिक स्कूटर में काफी ज्यादा है। राइडिंग के लिए इसमें ईको, राइड, डैश और सोनिक मोड दिए गए हैं। सोनिक मोड में स्कूटर को आसानी से 100 किलोमीटर प्रति घंटे से ज्यादा की स्पीड पर चलाया जा सकता है।

कैसा रहा अनुभव
Simple One के इस स्कूटर को हमने करीब 70 से 80 किलोमीटर तक चलाया। इस दौरान हमें इसकी हैंडलिंग काफी अच्छी लगी। स्कूटर के सोनिक मोड में काफी बेहतरीन पावर मिलती है और आसानी से स्कूटर को 100 किलोमीटर प्रति घंटे तक की स्पीड से चलाया जा सकता है। हाइवे पर इसे चलाने में किसी भी तरह की परेशानी नहीं लगी। हालांकि अभी इस स्कूटर को कुछ समय के लिए ही चलाया था, लेकिन भविष्य में इस स्कूटर के साथ ज्यादा समय लगाने के बाद एक लॉन्ग टर्म रिव्यू को भी आपके साथ साझा किया जाएगा। खराब सड़कों पर भी इसका प्रदर्शन अच्छा रहा, इसमें सस्पेंशन सेटअप को इस तरह से रखने की कोशिश की गई है जिससे न सिर्फ आराम मिले बल्कि स्पॉर्त्सनेस भी बरकरार रहे। ब्रेकिंग के मामले में भी स्कूटर काफी बेहतर लगा। तेज ब्रेक लगाने पर भी यह काफी कंट्रोल में रहा और किसी तरह की

इलेक्ट्रिक स्कूटर में काफी ज्यादा है। राइडिंग के लिए इसमें ईको, राइड, डैश और सोनिक मोड दिए गए हैं। सोनिक मोड में स्कूटर को आसानी से 100 किलोमीटर प्रति घंटे से ज्यादा की स्पीड पर चलाया जा सकता है।

कैसा रहा अनुभव

Simple One के इस स्कूटर को हमने करीब 70 से 80 किलोमीटर तक चलाया। इस दौरान हमें इसकी हैंडलिंग काफी अच्छी लगी। स्कूटर के सोनिक मोड में काफी बेहतरीन पावर मिलती है और आसानी से स्कूटर को 100 किलोमीटर प्रति घंटे तक की स्पीड से चलाया जा सकता है। हाइवे पर इसे चलाने में किसी भी तरह की परेशानी नहीं लगी। हालांकि अभी इस स्कूटर को कुछ समय के लिए ही चलाया था, लेकिन भविष्य में इस स्कूटर के साथ ज्यादा समय लगाने के बाद एक लॉन्ग टर्म रिव्यू को भी आपके साथ साझा किया जाएगा। खराब सड़कों पर भी इसका प्रदर्शन अच्छा रहा, इसमें सस्पेंशन सेटअप को इस तरह से रखने की कोशिश की गई है जिससे न सिर्फ आराम मिले बल्कि स्पॉर्त्सनेस भी बरकरार रहे। ब्रेकिंग के मामले में भी स्कूटर काफी बेहतर लगा। तेज ब्रेक लगाने पर भी यह काफी कंट्रोल में रहा और किसी तरह की

2025 सिम्पल एक हुआ लॉन्च,ओला, एथर, टीवीएस से होगा कड़ा मुकाबला, कीमत 1.66 लाख रुपये

परिवहन विशेष न्यूज
2025 सिम्पल वन लॉन्च भारत की स्टार्टअप Simple Energy की ओर से भारतीय बाजार में अपने Electric Scooter को 1.5 जेनरेशन को बाजार में लॉन्च कर दिया है। कंपनी की ओर से इस स्कूटर में किस तरह के बदलाव किए गए हैं। कितनी दमदार मोटर और बैटरी को दिया गया है। बाजार में किन स्कूटर्स के साथ इसका सीधा मुकाबला होगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में इलेक्ट्रिक स्कूटर सेगमेंट में लगातार नए वाहनों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। भारतीय स्टार्टअप Simple Energy की ओर से भी 11 फरवरी को 1.5 जेनरेशन Electric Scooter को लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से इसमें किस तरह के बदलाव किए गए हैं। कितनी दमदार मोटर और बैटरी को दिया गया है। सिंगल चार्ज में इसे कितने किलोमीटर तक चलाया जा सकेगा। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुआ 1.5 जेनरेशन Simple One Electric Scooter
सिंपल वन की ओर से 1.5 जेनरेशन वाले इलेक्ट्रिक स्कूटर को भारतीय बाजार में लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से इस स्कूटर के पुराने वर्जन के मुकाबले कुछ बदलाव किए हैं।

कितनी दमदार बैटरी और मोटर
कंपनी की ओर से स्कूटर में 5kWh की क्षमता की दो बैटरी दी हैं। इनमें से एक बैटरी फिक्स्ड है जिसे फ्लोर में लगाया गया है, जबकि दूसरी बैटरी रिमूवेबल बैटरी है जिसको बूट स्पेस के साथ पोजिशन किया

गया है। इन दोनों बैटरी से स्कूटर को सिंगल चार्ज में 248 किलोमीटर तक की IDC रेंज मिल सकती है। इनको फुल चार्ज करने में करीब छह घंटे तक का समय लगता है। इसमें लगी मोटर से इसे 2.77 सेकेंड में 0-40 किलोमीटर की स्पीड हासिल की जा सकती है। इसकी टॉप स्पीड 105 किलोमीटर प्रति घंटा तक है। जिसके साथ राइडिंग के कई मोड्स को दिया जाता है।

Simple One electric scooter Features
Simple One 1.5 Generation इलेक्ट्रिक स्कूटर में कई बेहतरीन फीचर्स को जोड़ा गया है। इसमें एप इंटीग्रेशन को बेहतर किया गया है। इसके साथ ही इसमें नेविगेशन, अपडेटेड राइड मोड्स, पार्क असिस्ट, ओटीए अपडेट्स, रीजनरेटिव ब्रेकिंग, ट्रिप हिस्ट्री, कस्टमाइज डैश थीम, फाईंड माई फीचर, रैपिड ब्रेक, टीपीएमएस, यूएसबी चार्जिंग पोर्ट, ऑटो ब्राइटेनेस, एलईडी डीआरएल, एलईडी लाइट्स जैसे कई फीचर्स को दिया गया है।

कितनी है कीमत
कंपनी की ओर से इस स्कूटर को 1.66 लाख रुपये की एकशोरूम कीमत (electric scooter India 2025 Price) पर लाया गया है। यह कीमत बेंगलुरु के लिए मान्य होगी। इसके साथ ही कंपनी की योजना अगले कुछ समय में 23 राज्यों में 150 नए स्टोर और करीब 200 सर्विस सेंटर खोलने की है।

किनसे होगा मुकाबला
Simple One 1.5 Gen स्कूटर को प्रीमियम इलेक्ट्रिक स्कूटर के तौर पर लाया गया है। इस स्कूटर का बाजार में सीधा मुकाबला Ola, Ather, Bajaj, TVS जैसी कंपनियों के इलेक्ट्रिक स्कूटर्स के साथ होगा।

महिंद्रा बीई6 के बेस वेरिएंट पैक वन में मिलते हैं कैसे विशेषताएँ, क्या होगी श्रेणी और कीमत?



परिवहन विशेष न्यूज

महिंद्रा की ओर से कुछ समय पहले ही नई Electric SUV के तौर पर BE6 को लाया गया है। जल्द ही एसयूवी के लिए बुकिंग को शुरू किया जाएगा। Mahindra BE6 के बेस वेरिएंट Pack One में कितनी दमदार बैटरी और मोटर मिलती है। किस तरह के फीचर्स मिलते हैं। कितनी रेंज के साथ इसे लाया जाएगा। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में एसयूवी को ऑफर करने वाली निर्माता Mahindra की ओर से नई Electric SUV के तौर पर Mahindra BE6 को लाया गया है। कंपनी की ओर से इस एसयूवी के बेस वेरिएंट के तौर पर ऑफर किए जाने वाले Pack One में किस तरह की खासियत को दिया जाता है। क्या इसे खरीदना आपके लिए बेहतर विकल्प साबित हो सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Mahindra कर रही है BE6 को

इलेक्ट्रिक स्कूटर में काफी ज्यादा है। राइडिंग के लिए इसमें ईको, राइड, डैश और सोनिक मोड दिए गए हैं। सोनिक मोड में स्कूटर को आसानी से 100 किलोमीटर प्रति घंटे से ज्यादा की स्पीड पर चलाया जा सकता है।

कैसा रहा अनुभव
Simple One के इस स्कूटर को हमने करीब 70 से 80 किलोमीटर तक चलाया। इस दौरान हमें इसकी हैंडलिंग काफी अच्छी लगी। स्कूटर के सोनिक मोड में काफी बेहतरीन पावर मिलती है और आसानी से स्कूटर को 100 किलोमीटर प्रति घंटे तक की स्पीड से चलाया जा सकता है। हाइवे पर इसे चलाने में किसी भी तरह की परेशानी नहीं लगी। हालांकि अभी इस स्कूटर को कुछ समय के लिए ही चलाया था, लेकिन भविष्य में इस स्कूटर के साथ ज्यादा समय लगाने के बाद एक लॉन्ग टर्म रिव्यू को भी आपके साथ साझा किया जाएगा। खराब सड़कों पर भी इसका प्रदर्शन अच्छा रहा, इसमें सस्पेंशन सेटअप को इस तरह से रखने की कोशिश की गई है जिससे न सिर्फ आराम मिले बल्कि स्पॉर्त्सनेस भी बरकरार रहे। ब्रेकिंग के मामले में भी स्कूटर काफी बेहतर लगा। तेज ब्रेक लगाने पर भी यह काफी कंट्रोल में रहा और किसी तरह की

इलेक्ट्रिक स्कूटर में काफी ज्यादा है। राइडिंग के लिए इसमें ईको, राइड, डैश और सोनिक मोड दिए गए हैं। सोनिक मोड में स्कूटर को आसानी से 100 किलोमीटर प्रति घंटे से ज्यादा की स्पीड पर चलाया जा सकता है।

कैसा रहा अनुभव

Simple One के इस स्कूटर को हमने करीब 70 से 80 किलोमीटर तक चलाया। इस दौरान हमें इसकी हैंडलिंग काफी अच्छी लगी। स्कूटर के सोनिक मोड में काफी बेहतरीन पावर मिलती है और आसानी से स्कूटर को 100 किलोमीटर प्रति घंटे तक की स्पीड से चलाया जा सकता है। हाइवे पर इसे चलाने में किसी भी तरह की परेशानी नहीं लगी। हालांकि अभी इस स्कूटर को कुछ समय के लिए ही चलाया था, लेकिन भविष्य में इस स्कूटर के साथ ज्यादा समय लगाने के बाद एक लॉन्ग टर्म रिव्यू को भी आपके साथ साझा किया जाएगा। खराब सड़कों पर भी इसका प्रदर्शन अच्छा रहा, इसमें सस्पेंशन सेटअप को इस तरह से रखने की कोशिश की गई है जिससे न सिर्फ आराम मिले बल्कि स्पॉर्त्सनेस भी बरकरार रहे। ब्रेकिंग के मामले में भी स्कूटर काफी बेहतर लगा। तेज ब्रेक लगाने पर भी यह काफी कंट्रोल में रहा और किसी तरह की

ज्यादा फीचर्स और रेंज के साथ आया स्कूटर, क्या खरीदने में होगी समझदारी?

परिवहन विशेष न्यूज
2025 सिंपल वन फर्स्ट राइड समीक्षा सिंपल वन की ओर से अपने इलेक्ट्रिक स्कूटर को और बेहतर किया गया है। इसमें कई नए फीचर्स को जोड़ा गया है और इसकी रेंज को भी बढ़ाया गया है। जिसके बाद हमने इस स्कूटर को चलाकर देखा। क्या पहले से बेहतर होने के बाद इसे खरीदना समझदारी होगी या नहीं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई कंपनियों की ओर से Electric Scooters ऑफर किए जाते हैं। Simple One की ओर से भी ऑफर किए जाने वाले स्कूटर को पहले से ज्यादा बेहतर बनाने की कोशिश की गई है। इसमें कुछ नए फीचर्स को जोड़ा गया है साथ ही इसकी रेंज को भी बेहतर किया गया है। जिसके बाद हमने इसे चलाया (Simple One First Ride Review) और समझने की कोशिश की। क्या अब इस स्कूटर को खरीदना

अच्छा विकल्प हो सकता है या नहीं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

पहले से बेहतर हुआ स्कूटर
कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक Simple One के 2025 वर्जन को पहले से बेहतर बनाया गया है। पुराने वर्जन के मुकाबले नए स्कूटर में कई बदलाव किए गए हैं और इसमें कई नए फीचर्स को जोड़ा गया है। साथ ही अब इस स्कूटर को पहले से ज्यादा दूरी तक चलाया जा सकता है।

पहले जैसा डिजाइन
सिंपल वन की ओर से अपने स्कूटर के डिजाइन में किसी तरह का भी बदलाव नहीं किया गया है। इस स्कूटर को पहले से ही बेहतर तरीके से डिजाइन किया गया था, ऐसे में लक्स के मामले में यह काफी शॉप और स्पोर्टी दिखाई देता है। इसमें ड्यूल टोन पेंट स्कीम को दिया जाता है जिससे यह दिखने में काफी बेहतर लगता है। साथ ही स्कूटर की फिनिशिंग भी बेहतर हुई है और किसी भी तरह का गैप किसी पैनेल में दिखाई नहीं देता। सीट के नीचे रिमूवेबल बैटरी होने के बाद भी करीब 30 लीटर की स्टोरेज मिलती है, जिसमें काफी सामान रखा जा सकता है।

Simple One electric scooter

features
सिंपल वन ने अपने इस स्कूटर में कई नए फीचर्स को जोड़ा है। इसमें अब टीपीएमएस जैसे फीचर को दिया गया है। इसके अलावा इसमें पार्क असिस्ट, फाईंड माई व्हीकल, डैश बोर्ड की थीम को कस्टमाइज करने का फीचर, रैपिड ब्रेकिंग, ओटीए अपडेट के साथ ही स्मार्टफोन कनेक्टिविटी को दिया गया है। जिससे राइड के दौरान कई तरह की जानकारी तो मिलती ही है साथ ही फोन पर आने वाले कॉल और मैसेज के अलर्ट्स को भी इसकी साइट इंच की स्क्रीन पर देखा जा सकता है।

बैटरी और रेंज
कंपनी के मुताबिक इस स्कूटर की रेंज को बढ़ाया गया है। अब इसे 248 किलोमीटर (IDC Range) तक चलाया जा सकता है। लेकिन रियल वर्ल्ड में इसकी रेंज 180 से 200 किलोमीटर के आस-पास तक मिल सकती है। स्कूटर में 5kWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है जिसमें से एक बैटरी रिमूवेबल और एक फिक्स्ड बैटरी है जिसे फ्लोर पर दिया गया है। दोनों बैटरी को चार्ज करने में करीब छह घंटे तक का समय लगता है। इसमें 8.5 किलोवाट की मोटर से 72 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है जो एक



परेशानी नहीं लगी।

समीक्षा
पहले से ज्यादा फीचर्स, राइड क्वालिटी, हैंडलिंग और ब्रेकिंग के मामले में तो यह स्कूटर काफी बेहतर लगता है। लेकिन इसमें इसमें क्रूज कंट्रोल, हवाई लैंप और फास्ट चार्जिंग जैसे फीचर्स को भी ऑफर किया जाता तो यह अपने सेगमेंट में आने वाले अन्य स्कूटर्स के मुकाबले ज्यादा बेहतर तरीके से

चुनौती दे सकता था। इसके अलावा इस स्कूटर को चलाते हुए अगर राइडिंग मोच रिवच करने में थोड़ा समय लगता है और रेस छोड़ने के बाद ही इसे अन्य मोड में रिवच किया जा सकता है, जिसे बेहतर किया जा सकता है। लेकिन फिर भी 1.67 लाख रुपये की एकशोरूम कीमत पर इसे खरीदना फायदेमंद साबित हो सकता है।



विजय गर्ग

इम्तिहान के दिन आ रहे हैं और चिंता गई है। बहुत से बच्चे तो मानते हैं कि किसी न किसी तरह इम्तिहान टल जाएं। कई बार तो ऐसा होता है कि पूरे साल मेहनत की होती है, लेकिन जैसे ही प्रश्न-पत्र सामने आता है, सब कुछ भूल जाते हैं या बहुत कुछ खत्म हो जाएगा। पूरे भरोसे से परीक्षा देना। पहले ध्यान से पूरे प्रश्न-पत्र को पढ़ना। जो आता हो, उसे सबसे पहले करना। बच्चे भी पूरी रात जागकर पढ़ाई करते थे और जब सुबह होती थी तो नींद आने लगती है। परीक्षा देने जाते वक़्त रास्ते भर सिर्फ यही सोचते रहते थे कि कैसा प्रश्न-पत्र आएगा।

इन दिनों भी बच्चों को इस तरह की परेशानियां

विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस: यूनेस्को इसे 11 फरवरी को क्यों मनाता है?

विजय गर्ग

2025 विज्ञान विषय में महिलाओं और लड़कियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस: यह वर्ष विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों के दसवें अंतर्राष्ट्रीय दिवस को 'अनपैकिंग स्टेम करियर: हिज वॉयस इन साइंस' के विषय के साथ चिह्नित करता है। 'अनपैकिंग स्टेम करियर': 11 फरवरी को विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में क्यों मनाया जाता है? यह दिन संयुक्त राष्ट्र द्वारा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) क्षेत्रों में महिलाओं की पूर्ण और समान पहुंच और भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है। विज्ञान 2025 में महिलाओं और लड़कियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस: जैसा कि यूनेस्को ने उल्लेख किया है, 21 वीं शताब्दी में विज्ञान गतिशील, सहयोगी और विविध है, जो प्रयोेशालाओं में पेर वैश्विक चुनौतियों को संबोधित करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में सेवारत है। इस वर्ष विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों के 10 वें अंतर्राष्ट्रीय दिवस का प्रतीक है, जिसमें 'अनपैकिंग स्टेम करियर: उसकी आवाज इन साइंस' का विषय है।

विज्ञान में महिला और लड़कियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस हर फरवरी 11 को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र इस दिन को विज्ञान,

प्रभु की अनुकम्पा

विजय गर्ग

एक व्यक्ति गाड़ी से उतरा... और बड़ी तेजी से एयरपोर्ट में घुसा, जहाज उड़ने के लिए तैयार था, उसे किसी कार्यक्रम में पहुंचना था जो खास उसी के लिए आयोजित की जा रही था... य वह अपनी सीट पर बैठा और जहाज उड़ गया... अभी कुछ दूर ही जहाज उड़ा था कि...कैप्टन ने घोषणा की, तूफानी बारिश और बिजली की वजह से जहाज का रेडियो सिस्टम ठीक से काम नहीं कर रहा... इसलिए हम पास के एयरपोर्ट पर उतरने के लिए विवस हैं। जहाज उतरा बस बाहर निकल कर कैप्टन से शिकायत करने लगा कि... उसका एक-एक मिनट क्रीमती है और होने वाली कार्यक्रम में उसका पहुँचना बहुत जरूरी है... पास खड़े दूसरे यात्री ने उसे पहचान लिया... और बोला डॉक्टर पटनायक आप जहां पहुँचना चाहते हैं... टैक्सी द्वारा यहां से केवल तीन घंटे में पहुँच सकते हैं... उसने धन्यवाद किया और टैक्सी लेकर निकल पड़ा... लेकिन ये क्या आंभी, तूफान, बिजली, बारिश ने गाड़ी का चलना मुश्किल कर दिया, फिर भी ड्राइवर चलता रहा... अचानक ड्राइवर को आभास हुआ कि वह रास्ता भटक चुका है... ना उम्मीदी के उतार चढ़ाव के बीच उसे एक छोटा सा घर दिखा... इस तूफान में वहीं गनीमत समझ कर गाड़ी से नीचे उतरा और दरवाजा खटखटाया... आवाज आई... जो कोई भी है अंदर आ जाए... दरवाजा खुला है... अंदर एक बुढ़िया आसन बिछाए भगवद् गीता पढ़ रही थी... उसने कहा ! मांजी अगर आज्ञा हो तो आपका फोन का उपयोग कर लूँ...



बुढ़िया मुस्कुराई और बोली... बेटा कौन सा फोन ? यहां ना बिजली है ना फोन...

लेकिन तुम बैठो... सामने चरणामृत है, पी लो... थकान दूर हो जायेगी... और खाने के लिए भी कुछ ना कुछ फल मिल जायेगा...खा लो !ताकि आगे यात्रा के लिए कुछ शक्ति आ जाये... डाक्टर ने धन्यवाद किया और चरणामृत पीने लगा... बुढ़िया अपने पाठ में खोई थीं लेकिन उसके पास उसकी नजर पड़ी... एक बच्चा कंबल में लपेटा पड़ा था जिसे बुढ़िया थोड़ी थोड़ी देर में हिला देती थी...

बुढ़िया की पूजा हुई तो उसने कहा... मां जी ! आपके स्वभाव और व्यवहार ने मुझ पर जादू कर दिया है... आप मेरे लिए भी प्रार्थना कर देंलिए... यह मौसम साफ हो जाये मुझे उम्मीद है आपकी प्रार्थनायें अवश्य स्वीकार होती होंगी...

बुढ़िया बोली... नही बेटा ऐसी कोई बात नहीं... तुम मेरे अतिथी हो और अतिथी की सेवा ईश्वर का आदेश है... मैंने तुम्हारे लिए भी प्रार्थना की है... परमात्मा की कृपा है... उसने मेरी हर प्रार्थना सुनी है...

बस एक प्रार्थना और मैं उससे माँग रही हूँ शायद जब वह चाहेगा उसे भी स्वीकार कर लेगा... कौन सी प्रार्थना...? ? डाक्टर बोला... बुढ़िया बोली... ये जो 2 साल का

और चिंताएँ बहुत होती हैं। इम्तिहानों के डर से बहुत से बच्चे घर तक से भाग जाते हैं या बीमार पड़ जाते हैं। इसीलिए इन दिनों सीबीएसई और तमाम राज्य सरकारें इम्तिहान के दिनों में बच्चों के लिए हेल्पलाइन नंबर जारी करती हैं। तमाम एफएम चैनल्स में मनोवैज्ञानिक और काउंसलर बच्चों की मदद के लिए मौजूद रहते हैं। इम्तिहान के समय होने वाली चिंता, समय पर कुछ न याद आना, प्रश्न-पत्र देखते ही सब कुछ भूल जाने को अंग्रेजी में 'टेस्ट एंजाइटी' कहते हैं। बताया जाता है कि सोलह से बीस फीसदी तक बच्चे तरह-तरह की एंजाइटी के शिकार होते हैं। अमेरिका में दस से लेकर चालीस फीसदी तक बच्चे टेस्ट एंजाइटी से पीड़ित पाए गए हैं। इम्तिहानों में अच्छा कर सकें, इसके लिए थोड़ी-बहुत चिंता या तनाव तो ठीक है, लेकिन इसका जरूरत से ज्यादा बढ़ जाना ठीक नहीं है। बच्चों को तरह-तरह के डर सताते हैं कि कहीं फेल न हो जाएं। नंबर अच्छे नहीं आए तो माता-पिता, दोस्तों और अड़ोसी पड़ोसियों का सामना कैसे करेंगे?

वैसे भी, इन दिनों माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे के हर विषय में सौ में सौ अंक आएँ। वे क्लास में ही नहीं, पूरे बोर्ड एजाम में टॉप करें। इस तरह की उम्मीद बच्चों का तनाव बढ़ाती हैं। न केवल तनाव, बल्कि उल्टी, पेट दर्द, जरूरत से ज्यादा पसीना आने लगता है। इससे बच्चों की सेहत पर भी बुरा असर पड़ता है। एनसीआरबी की रिपोर्ट में बताया गया था कि बोर्ड के इम्तिहानों की चिंता के कारण आत्महत्या करने वाले बच्चों की तादाद तमिलनाडु में सबसे ज्यादा है। वहां बोर्ड के



इम्तिहानों से पहले सौ बच्चों पर एक अध्ययन किया गया था। इनमें पचास लड़के और पचास बच्चों में चिंता के लक्षण देखे गए। दसवीं, बारहवीं के बच्चों में नौवीं, ग्यारहवीं के बच्चों के मुकाबले टेस्ट एंजाइटी जरूरत से ज्यादा थी। इसे सीवियर टेस्ट एंजाइटी कहते हैं। अड़तीस फीसदी में कुछ कम और चार फीसद में मामूली थी। लड़कियों के मुकाबले लड़कों में टेस्ट एंजाइटी ज्यादा थी। इसके अलावा, संयुक्त परिवारों के मुकाबले, एकल परिवारों में रहने वाले बच्चे इससे अधिक ग्रस्त थे। इसका कारण बताया गया कि माता-पिता यदि बच्चों पर ध्यान न भी दे पाएं तो दादा-दादी का सहारा मिल जाता है और उन्हें इम्तिहान के दिनों में कम तनाव और चिंता होती है। संयुक्त परिवारों में

रहने वाले बच्चों में सीवियर टेस्ट एंजाइटी पाई ही नहीं गई। इम्तिहान के दिनों में लगभग सभी बच्चों में चिंता के लक्षण देखे गए। दसवीं, बारहवीं के बच्चों में नौवीं, ग्यारहवीं के बच्चों के मुकाबले अधिक टेस्ट एंजाइटी पाई गई। कुछ बच्चों की यह आदत होती है कि जब प्रश्न-पत्र आता है तो सबसे पहले मुश्किल सवालों को हल करने की कोशिश करते हैं, जो कि बिल्कुल गलत है। मुश्किल सवालों को करते वक़्त यदि किसी सवाल में उलझ गए तो पूरा समय तो उसी में बर्बाद हो जाता है और जो सवाल आपको आते हैं, वह भी छूट जाते हैं।

तो बच्चे क्या करें ? जानकारों का कहना है कि इम्तिहान के दिनों में भी बच्चे पूरी नींद लें। पौष्टिक भोजन के साथ-साथ ख़ूब पानी पिएं। हलका

विजय गर्ग

प्लास्टिक कचरा आज पर्यावरण की एक गंभीर समस्या बन चुका है, जो न केवल धरती, महासागरों और नदियों को प्रभावित कर रहा है, बल्कि हमारे भोजन और पानी में भी मिल रहा है। पारंपरिक प्लास्टिक का निर्माण पेट्रोलियम उत्पादों से होता है, जो प्रदूषण बढ़ाते हैं और सैकड़ों सालों तक नष्ट नहीं होते। इस समस्या का समाधान तलाशने के लिए वैज्ञानिक चावल-आधारित बायोप्लास्टिक को देख रहे हैं, जो प्लास्टिक का टिकाऊ और पर्यावरण-मित्र विकल्प हो सकता है।

चावल दुनियाभर में सबसे अधिक उगाया और खाया जाने वाला अनाज है। इसके प्रसंस्करण के दौरान बड़ी मात्रा में कृषि अवशेष, जैसे धान की भूसी और पराली, निकलते हैं। आमतौर पर इनका कोई विशेष उपयोग नहीं होता और कई बार किसान इन्हें जलाने के लिए मजबूर हो जाते हैं, जिससे वायु प्रदूषण बढ़ता है। दिसम्बर-जनवरी के महीनों में दिल्ली और इसके आसपास के इलाकों में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर तक पहुंच जाता है। वैज्ञानिकों ने इस कृषि कचरे का उपयोग बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक बनाने में करना सीख लिया है, जिससे न केवल कृषि कचरे का पुनर्चक्रण होता है, जो पर्यावरण के लिए फायदेमंद है, बल्कि इससे किसानों की आय भी बढ़ सकती है और उद्योगों के लिए एक नया लाभकारी अवसर उत्पन्न हो सकता है।

पारंपरिक प्लास्टिक कचरे की समस्या यह है कि यह पर्यावरण में आसानी से नष्ट नहीं होता और धीरे-धीरे छोटे कणों में टूटकर माइक्रोप्लास्टिक में बदल जाता है। यही माइक्रोप्लास्टिक हमारे पानी, भोजन और यहां तक ​​कि हवा में भी मिल चुके हैं, जो स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन सकते हैं। शोध बताते हैं कि हर साल लाखों टन प्लास्टिक महासागरों में पहुंच जाता है, जिससे समुद्री जीव-जंतुओं को भारी



नुकसान होता है। इसके अलावा, प्लास्टिक बनाने की प्रक्रिया में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है, जिससे जलवायु परिवर्तन की समस्या और गंभीर हो जाती है। पारंपरिक प्लास्टिक की रिसाइक्लिंग भी पूरी तरह से प्रभावी नहीं है, क्योंकि अधिकांश प्लास्टिक या तो लैंडफिल में चला जाता है या जलाए जाने पर हानिकारक गैसें उत्पन्न करता है।

बायोप्लास्टिक प्राकृतिक रूप से विघटित हो सकते हैं और पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचाते। इन्हें जैविक स्रोतों से बनाया जाता है, जैसे मक्का, गन्ना और अब चावल। चावल से बने बायोप्लास्टिक में मुख्य रूप से स्टार्च और सेल्यूलोज का इस्तेमाल होता है। चावल के स्टार्च को कुछ प्राकृतिक पदार्थों, जैसे ग्लिसरॉल, के साथ मिलाकर एक लचीला और टिकाऊ प्लास्टिक तैयार किया जाता है।

इसके अलावा, चावल की भूसी से सेल्यूलोज निकाला जाता है, जिसे आगे की प्रक्रिया में तैयार करके मजबूत बायोप्लास्टिक बनाया जा सकता है।

विजय गर्ग

पिछले दिनों शीर्ष न्यायालय ने एक निर्णय में कहा कि अगर बच्चे बुजुर्ग मां-बाप की देखभाल नहीं करते, तो उनके नाम हस्तांतरित की गई संपत्ति उनसे वापस ली जा सकती है। । अदालत को यह निर्णय इसलिए देना पड़ा, क्योंकि एक बुजुर्ग महिला ने इस आधार पर बेटे के नाम की गई संपत्ति रह करने की मांग की थी कि उसने संपत्ति हासिल करने के बाद उसकी देखभाल करनी बंद कर दी। थी। । उसकी गुहार पर मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने यह निर्णय दिया था कि माता- पिता की देखभाल न करने पर बच्चों को दी गई संपत्ति वापस नहीं ली जा सकती। बहरहाल, यह स्वागतयोग्य है कि शीर्ष अदालत ने इस फैसले को पलट कर महिला को राहत दी। लेकिन क्या इससे समाज और विशेष रूप से उन बच्चों को कोई सबक मिलेगा, जो मां-बाप की संपत्ति हासिल करने के बाद भी उनकी देखभाल नहीं करते या फिर उन्हें उनके हाल पर छोड़ देते हैं ? इसी कारण पश्चिमी देशों की तरह अपने देश में भी वृद्धाश्रम बढ़ रहे हैं, लेकिन यह । यह समझा जाना चाहिए कि सभी बुजुर्ग आर्थिक रूप सके।

5 रूप से इतने सक्षम नहीं होते कि वृद्धाश्रम में रह आर्थिक यह किसी से छिपा नहीं है कि बच्चों की उपेक्षा से त्रस्त और रूप से अक्षम बुजुर्ग दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर एकल परिवारों का चलन बढ़ रहा है। इसलिए इसमें वृद्धाश्रमों का आवश्यकता बढ़ रही है। बुजुर्गों के स्वास्थ्य और आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति पर अध्ययन की रपट के रपट के अनुसार देश के हर चार में से तीन बुजुर्ग किसी भी प्रकार गंभीर रोग का शिकार हैं। हर चौथा बुजुर्ग ऐसी कई बीमारियों से हर पांचवां किसी मानसिक रोग से पीड़ित है जीवन प्रत्याशा जो कुछ दशक पहले तक 45 वर्ष थी, वह आज लगभग 70

उपेक्षा का दंश झेलते बुजुर्ग



वर्ष है। यानी बुजुर्ग बढ़ रहे हैं है। रपट के मुताबिक, जिन घरों में बुजुर्ग हैं, उनके यहां का प्रति व्यक्ति खर्च भी इसी अस्थवस्था से ज्यादा है। फिलहाल, देश में हर दस लोगों में एक बुजुर्ग है। हर चौथा वृद्ध अपने रोजमर्रा के काम करने में दिक्कत झेलता है। । समुचित और सस्ती स्वास्थ्य सुविधा के अभाव में दस में नौ वृद्ध घर ही अपना इलाज कराते हैं, जबकि हर तीसरा वृद्ध दिल का मरीज है। सवाल है कि आखिर बुजुर्गों की देखभाल से समाज विमुख क्यों हो रहा है ? आज मनुष्य का सामाजिक जीवन खतरने है। वह अपने घर के बड़े-बूढ़ों की समुचित देखभाल तक ठीक से नहीं कर रहा है। आज मनुष्य का सामाजिक जीवन खतरने है। वह अपने घर के बड़े-बूढ़ों की समुचित देखभाल तक ठीक से नहीं कर रहा है। आज मनुष्य का सामाजिक जीवन खतरने है। वह अपने घर के बड़े-बूढ़ों की समुचित देखभाल तक ठीक से नहीं कर रहा है। सरकार ने आयुष्मान भारत योजना लागू की है, लेकिन इसमें केवल चालीस फीसद लोग शामिल हैं। हर विकासशील अर्थव्यवस्था में सरकारी नीति 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों के लोगों के लिए मुफ्त स्वास्थ्य बीमा की है। अज एकल परिवार के दौर में बुजुर्गों के लिए सरकार को उनके सम्मानपूर्ण जीवन के लिए नीति, संस्थाएं और सामाजिक चेतना विकसित करनी होगी। वृद्धाश्रमों में कुछ व्यवस्था की कमी को दूर

करना होगा। यहां वृद्धों के लिए मनोरंजन सुविधाओं के अभाव के साथ समुचित चिकित्सा व्यवस्था की कमी है। सरकार ने इन समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया है। इससे बुजुर्ग स्वाभिमान के साथ जीवन बिता सकेंगे। सवाल है कि जब वरिष्ठ नागरिकों के लिए अनेक सरकारी योजनाएं हैं, तो फिर उनको हालत चिंताजनक क्यों है ? गौरतलब है कि बुजुर्गों को अपमान का सामना करना पड़ता है, उनको तिरस्कार की नजर से देखा जाता है। साथ ही उनको वित्तीय परेशानी के अलावा मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न का भी सामना करना पड़ता है। अक्सर समाज उनसे भेदभाव करता है। अस्पतालों, बस अड्डों, सार्वजनिक वाहनों तथा बाजार में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार के मामले सामने आते हैं।

रपट के अनुसार, सबसे ज्यादा अवसादग्रस्त बुजुर्ग, मध्यप्रदेश में 17 फीसद, उत्तर प्रदेश में 14 फीसद, दिल्ली में 11 फीसद और बिहार एवं गोवा में दस फीसद हैं। किसी भी समाज को तब तक सभ्य, विकसित और संवेदनशील नहीं कह सकते, जब तक उसके असहाय और बीमार

में लिखने-पढ़ने सामान एक जगह ही रखें, ताकि खोजने में समय खराब न हो। अच्छा यह भी रहता है कि इम्तिहान शुरू होने से पंद्रह मिनट पहले परीक्षा केंद्र में पहुंच जाएं, क्योंकि कई बार ऐसी दुर्घटनाएं हो जाती हैं, जिनका पहले से पता नहीं होता । जैसे कि ट्रैफिक जाम में फंसना, साइकिल का पंकचर होना, जिस दोस्त के साथ जाना था, उसका न आना या देर से आना। घर में किसी का अचानक बीमार पड़ जाना ।

यदि परीक्षा केंद्र पर जल्दी जाने के बारे में सोचेंगे तो इन सभी मुश्किलों से आसानी से निपट सकते हैं। इसके अलावा पहले पहुंचकर दोस्तों से हंसी-मजाक करके भी तनाव कम होता है। हालांकि, कुछ मामलों में देखा गया है कि दोस्त की तैयारी के बारे में जानकर अपनी तैयारी पर शक होने लगता है, इसलिए तनाव और परीक्षा का डर बढ़ता है। परीक्षा के दिनों में माता-पिता को बच्चों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि वे बच्चे की परेशानी से बेखबर रहें और बच्चा अगली किसी भारी परेशानी में पड़ जाए।

यह प्रश्न-पत्र से लेकर कॉपी जांचने और नतीजे तक उदारता बरतने का समय है। पुराने दिनों को याद करती हूं, तो इम्तिहान के दिनों में इतनी नींद आती थी कि किताब सामने है और झपकी आ रही है। मगर जिस दिन इम्तिहान खत्म हो जाते थे, नींद का कहीं पता नहीं होता था। शायद आज भी बच्चों के साथ ऐसा ही होता होगा। मां-बाप को भी चाहिए कि बच्चों पर इम्तिहान के वक़्त ज्यादा दबाव न बनाएं बल्कि इतना ही कहें कि खूब मेहनत करो, फिर चाहे नतीजा जो भी हो।

कप और खिलौनों के निर्माण में भी बायोप्लास्टिक का उपयोग बढ़ रहा है। इसी तरह, टेक्सटाइल और फैशन उद्योग में, बायोपॉलिमर से बने जैविक कपड़े पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने में मदद कर सकते हैं। श्रौडी प्रिंटिंग में, बायोप्लास्टिक एडिशन मैन्युफैक्चरिंग में एक टिकाऊ विकल्प बन रहा है।

हालांकि, चावल-आधारित बायोप्लास्टिक के कई फायदे हैं, लेकिन इसे बड़े पैमाने पर अपनाने में कुछ बाधाएं भी हैं। फिलहाल इसकी उत्पादन लागत पारंपरिक प्लास्टिक की तुलना में महंगी है। कुछ बायोप्लास्टिक पारंपरिक प्लास्टिक की तरह मजबूत नहीं होते। इन्हें पूरी तरह विघटित होने के लिए सही परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। यदि बायोप्लास्टिक उत्पादन के लिए खाद्यान्न आधारित कच्चे माल का उपयोग बढ़ता है, तो इससे खाद्य सुरक्षा पर भी असर पड़ सकता है। इसके बावजूद, बायोप्लास्टिक की प्रगति में अपार संभावनाएं हैं, जिसके चलते इसका वैश्विक बाजार तेजी से बढ़ रहा है। यूरोपीय देशों ने इस तकनीक को अपनाने में अग्रणी भूमिका निभाई है। भारत में भी सिंगल-यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने की दिशा में कदम उठाए जा रहे हैं, जिससे बायोप्लास्टिक के लिए एक बड़ा अवसर पैदा हो सकता है। अगर चावल-आधारित बायोप्लास्टिक के उत्पादन को बढ़ावा दिया जाए और अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जाए, तो प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने का एक महत्वपूर्ण समाधान बन सकता है।

यदि, चावल-आधारित बायोप्लास्टिक को बड़े पैमाने पर अपनाया जाता है, तो यह पारंपरिक प्लास्टिक का एक बेहतर विकल्प बन सकता है। यदि इस तकनीक को प्रोत्साहित किया जाए और इसके विकास में निवेश बढ़ाया जाए, तो निश्चित ही यह हरित और स्वच्छ भविष्य के हमारे सपने को साकार करने में सहायक सिद्ध होगा।

बुजुर्गों की मुफ्त देखभाल करने वाली व्यवस्था न हो।

दुनिया में अधिकांश बेहतर अर्थव्यवस्था वाले देशों में बुजुर्गों के स्वास्थ्य के लिए सरकार की कल्याणकारी नीति है। वैसे भी भारत में स्वास्थ्य पर जीडीपी का नाममात्र का ही खर्च किया रहा है। इस वक़्त यह दुनिया का सबसे युवा देश है। अमेरिका के जनसंख्या संदर्भ ब्यूरो के एक अध्ययन के मुताबिक वर्ष 2050 तक आज का युवा भारत तब बूढ़ा हो जाएगा। ऐसा अनुमान है कि भारत में अभी छह फीसद आबादी साठ साल या उससे अधिक आयु की होगी। संयुक्त राष्ट्र की जनसंख्या कोष से जुड़ी 'इंडिया एजिंग रपट' 2023 के अनुसार भारत में 2022 में 60 वर्ष से ऊपर की जनसंख्या 10.5 फीसद या 14.9 करोड़ थी।इसके 2050 में 20.8 में 20.8 फीसद या 34.7 करोड़ हो जाने का अनुमान है। इसे देखते हुए हर पांच लोगों में एक वृद्ध हो जाएगा। । इसका प्रभाव स्वास्थ्य, समाज और अर्थव्यवस्था पर पड़ना तय है।



